योजनाएं बनाने वालों तथा समूह में आराधना का संचालन करने वालों व उनके सहयोगियों से संबंधित निर्देशः

ऐसी आराधना सभा का आयोजन कीजिये जिससे परमेश्वर की महिमा प्रकट हो, विश्वासियों का सुधार हो और आत्माएं यीशु के चरणों में आ सकें। आराधना संचालकों को प्रभु के वचन की भरपूरी एवं प्रार्थना के साथ स्वयं को तैयार करना चाहिये। अवश्य है कि वे अपने सहयोगियों के साथ मिलकर समय से बहुत पहले ही, निम्नलिखित निर्देशों का पालन करते हुए, आराधना संबंधी गतिविधियों की योजना बनाएं :

1. आराधना की गतिविधि समूह की संख्या के अनुसार हो :

- कलीसिया बहुधा छोटे झुण्ड के रूप में आरम्भ होती है और आराधना भी उसी प्रकार करना आवश्यक है जैसा नए विश्वासियों के समूह के लिये उपयुक्त हो।
- झुण्ड के प्रत्येक सदस्य को सक्रिय भाग लेना चाहिये, ऐसा न हो कि वे निष्क्रिय भाव से केवल सुनते ही रहें। बड़े झुण्ड की अपेक्षा छोटे झुण्ड में सक्रिय आराधना सरलता से की जा सकती है।
- जब प्रभु की स्तुति की जा रही हो, तो लोगों को उभारिये कि वे परमेश्वर की ओर ही ध्‍यान लगाएं न कि मनोरंजक संगीत पर और न ही इस बात पर कि अगुवा कितनी अच्छी तरह अगुवाई कर रहा है।
- गीतों का तथा अन्य आराधना संबंधी बातों का इस प्रकार चुनाव करें जिनका केन्द्र-बिन्दु परमेश्वर ही हो। आराधना संबंधी ऐसी गतिविधि का पहलु जिसका केन्द्र बिन्दु यह हो कि लोग क्या सीख रहे हैं और क्या कर रहे हैं, अच्छा है, पर आराधना के स्तुति-संबंधी पहलु के लिये उचित नहीं है।
- ऐसी कल्पना करना त्याग दें कि आपको आराधना के लिए श्रेष्ठ वाद्ययन्त्रों व संगीतकारों की आवश्यकता है, तब आप ऐसे संगीतकार खोज निकालते जो इतना अच्छा संगीत प्रस्तुत करते हैं कि लोग स्वयं स्तुति करना भूल जाते और निष्क्रिय भाव से संगीत ही सुनते रह जाते हैं। जहां लोग परमेश्वर की स्तुति करने की अपेक्षा प्रस्तुत-कर्ताओं की स्तुति करने लगें, ऐसी स्थिति से बचें।

2. ऐ, सी आराधना गतिविधि का चुनाव कीजिए जो आपकी परिस्थिति, समय, स्थानीय संस्कृति, आपके सदस्यों तथा आपकी तत्कालिक आवश्यकता के अनुकूल हो :

- बार बार एक समान कार्य की गतिविधि न अपनाइए। पवित्रात्मा का मार्गदर्शन प्राप्त कीजिये। इस पाठ्यक्रम में अनेकों गतिविधियां दी गई हैं, उनमें से एक गतिविधि चुन लें।
- समय से बहुत पहले ही प्रार्थना सहित अपने सहयोगियों के साथ योजना बनाईये।
- ऐसी आराधना गतिविधि से दूर रहें जिनका अगुवा अन्य संस्कृति की गतिविधि प्रयोग में लाता है, और जो स्थानीय संस्कृति एवं तत्कालिक आवश्यकता के प्रतिकूल होती है।

- यदि अविश्वासी लोग आराधना में उपस्थित होते हैं, तो ऐसी गतिविधियों को भी सम्मिलित करें जिससे उन्हें ख्रीस्त को पाने व ख्रीस्त पर विश्वास करने में सहायता मिले।
- आराधना की ऐसी योजना से बचें जिसमें कोई परिवर्तन न किया जा सके, चाहे किसी खोजी के उद्धार पाने का प्रश्न हो।
- जब आराधना चल रही हो तो, गम्भीर व वृद्ध जनों को आराधना पर चौकसी रखने का उत्तरदायित्व सौंपें कि सभा कैसी चल रही है। बड़े जनों को छोटे जनों व बच्चों को सभा में हिस्सा लेने के लिये कहना चाहिये।
- हालांकि महिलाओं व युवकों के पास पाठ तैयार करने के लिये पर्याप्त समय रहता है, फिर भी उन्हें आराधना सभा पर प्रबल न होने दीजिये, कहीं ऐसा न हो कि वे गंभीर व्यक्तियों को जो उनसे अच्छी तरह अगुवाई कर सकते हैं, डराकर रोक न दें।

3. सब विश्वासियों को सक्रिय रूप से भाग लेने को कहें :

- सभी आयु वर्ग के बच्चों को हिस्सा लेने दीजिये। पौलुस-तिमुथि अध्ययनमाला में बच्चों से संबंधित बाइबल कहानियां दी गई हैं जिन्हें वे नाटक के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं, इसके साथ साथ भजनसंहिता पर आधारित कविताएं भी हैं जिन्हें बच्चे मुखाग्र कर सकते हैं। किसी भी बच्चे को चुपचाप कमरे में न बैठा रहने दीजिए, सभी को स्तुति प्रसंशा व शिक्षण कार्य में हिस्सा दीजिए।
- मुख्य अगुवे एवं अन्य किसी अगुवे को आराधना सभा का अधिकांश समय न लेने दीजिए, ध्यान रखिए कि सभी लोग कार्यक्रम में हिस्सा लें तथा एक दूसरे का आदर करें।
- ऐसा न होने दीजिए कि वयस्क ही सारी परियोजनाओं को बनाएं और शिक्षण कार्य करें वरना बड़ी आयु के बच्चे नीरसपन अनुभव करने लगेंगे, संभव है वे शरारत भी करने लगें। नया-नियम की एक दूसरे से संबंधित आज्ञा का पालन करने में आराधकों की सहायता कीजिए।
- विश्वासियों को अवसर दीजिए कि वे कलीसिया को बता सकें कि मसीह के लिये उनके द्वारा क्या कुछ किया जा रहा है।
- विश्वासियों को दो, तीन या चार लोगों के छोटे समूहों में परस्पर बातचीत करने व प्रार्थना करने का अवसर प्रदान करें। इस प्रकार प्रत्येक को सुनने, प्रश्न पूछने, कार्यक्रमों की योजना बनाने, दूसरों को परामर्श देने व उनके लिये प्रार्थना करने का अवसर मिलेगा। विश्वासियों को कहें कि वे ऐसे व्यक्ति के साथ समय व्यतीत करें जो समस्याओं से घिरा हो, या दुखी हो। बीमारों के लिये, आत्माओं के उद्धार के लिये एवं एक दूसरे के लिये प्रार्थनाएं करें।
- सारा समय उन्हीं बातों में खर्च न होने दीजिए जिनकी योजना बनाई गई है। कुछ समय ऐसे कार्यो के लिए भी रखें जो कार्यक्रम में शामिल नहीं हैं, ताकि लोग आपस में मिलजुल सकें व परस्पर संगति का आनन्द उठा सकें तथा एक दूसरे को समझ सकें। लोगों को आपस में शान्त मन से बातचीत करने दें व एक दूसरे के लिये प्रार्थनाएं करने दें।
- समूह को छोटा ही रखें, ऐसा करने के लिये नया समूह बनाएं।
- बैठने के लिये गोलाई में कुर्सियां रखें, ध्यान रखें कि लोग निष्क्रिय होकर न बैठें जैसे बच्चे अपनी कक्षाओं में बैठते हैं।

- विचार-विमर्श करते समय एक या दो ही व्यक्तियों को प्रबल न होने दें जो लोग अधिक शिकायतें करते व अश्लीलता दिखाते हैं उन्हें सुधारना चाहिये। जो लोग अधिक बोलते हैं, उनकी ओर से ध्यान हटाने के लिये चरवाहे को कहना चाहिये कि अब ऐसे व्यक्ति को बोलने दीजिये जिसने अभी तक एक शब्द भी नहीं बोला है। सहायता कीजिये कि लोग स्वतन्त्रता का अनुभव करें और बिना झिझक बोलें तथा अपने विचार रखें।
- चौकस रहें कि लोग अपनी ही ओर समूह का ध्यानाकर्षित करने का प्रयत्न न करें। कुछ लोग हर सभा में अपनी समस्याओं का वर्णन करते हैं, उन्हें शायद इस बात में आनन्द आता है कि वे घातक परिस्थितियों के शिकार हैं। कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो किसी भी विषय पर दृढ़तापूर्वक अंतिम निर्णय सुनाने में गर्व का अनुभव करते हैं।

विश्वासियों को सिखाएं कि पवित्रशास्त्र को नाटकीय ढंग से पढ़ें या उन पर अभिनय करें। बाइबल की अनेक कहानियां ऐसी हैं जो दो व्यक्तियों के मध्य वार्तालाप के समान हैं। ऐसी कहानियों में उद्घोषक उन बातों को पढ़ सकता है जो वार्तालाप के रूप में नहीं हैं। उदाहरणार्थः

उद्घोषक उत्पत्ति ३ अध्याय के अंश पढ़े।

जो कुछ आदम ने कहा और किया उसे व्यक्ति पढ़ने के साथ अभिनय भी करे।

कोई महिला हव्वा की भूमिका निभाए।

अन्य कोई वयस्क शैतान की भूमिका करे।

कोई जन परमेश्वर द्वारा कहे गये वचन बोले।

4. विभिन्न वरदानों के प्रयोग किए जाने पर पवित्र आत्मा की आशीष हो ताकि विश्वासी लोग प्रेम से एक दूसरे की सेवा कर सकें।

- १ कुरिन्थियों अध्याय १२ व १३ में दिए गये पवित्रात्मा के वरदानों के उपयोग किए जाने के संबंध में एक विश्वासी जन से आकांक्षा की जाती है कि जिस प्रकार शरीर के विभिन्न अंग परस्पर सहयोगी भावना से कार्य करते हैं उसी प्रकार उन वरदानों को भी प्रेम से सबके लाभ के लिये उपयोग में लाएं तथा ऐसे कार्यक्रमों को न करें जो पृथकता उत्पन्न करते हैं या लोगों के बीच दीवार खड़ी करते हैं। अतः उन पारंपरिक कलीसियाओं के अनुसार न करें जो अपने किसी आत्मिक वरदान के कारण स्वयं को अलग करके एक भिन्न प्रकार का समूह बना लेते हैं और अपने आपको उस प्रकार की सेवकाई के विशेषज्ञ घोषित कर देते हैं, और उन साधारण लोगों से, जो किसी अन्य वरदानों का उपयोग करते हैं, किसी प्रकार का घनिष्ठ संबंध नहीं रखते।
- सप्ताह के बीच जो कार्य किया जाने वाला हो उसके बारे में आराधना के मध्य बता दें। कुछ कार्यक्रम ऐसे होना चाहिये जो उस सप्ताह के शिक्षण-विषय से मेल खाते हों। अन्य कार्यक्रम लोगों की परम आवश्यकताओं के अनुसार होने चाहिये।
- विश्वासियों को ऐसे लोगों व पड़ौसियों के विषय में सूचित करने दीजिए जो किसी प्रकार की समस्या या आवश्यकता में पड़े हैं, और उनके लिए वे क्या करने जा रहे हैं।
- विश्वासियों को उनकी योजनाएं व सुझाव बताने दीजिये और उत्तरदायित्व सौंपने दीजिये कि कौन क्या करेगा। योजनाओं में निम्न बातें सम्मिलित की जा सकती हैं :

-एक-दूसरे के लिये, बीमारों के लिये, खोए हुओं के लिए एवं दुष्टात्मा से पीड़ित लोगों के लिये-प्रार्थना करना।

–संगति

–अन्य कलीसियाओं से सहयोग करना

–आवश्यकता में पड़े हुओं की सहायता करना

–पारिवारिक आराधना

- नये नियम की "एक–दूसरे" से संबंधित आज्ञा का पालन करते हुए आपस में तथा कलीसिया में प्रेमपूर्ण सहभागिता बनाए रहें।

नये नियम की "एक दूसरे" से संबंधित आज्ञाएं

प्रेम :

- एक दूसरे से प्रेम रखो : यूहन्ना – १३:३४–३५ ५:१२,१७ रोमियों १२:१० १ थिस्सलुनीकियों ४:९ १ यूहन्ना ३:११,१४,२३ ४:७,११,१२ २ यूहन्ना १:५ १ पतरस १:२२
- व्यवस्था पूरी करने के लिये एक दूसरे से प्रेम करो : रोमियों १३:८
- आपस में निरंतर प्रेम बढ़ता जाए : २ थिस्सलुनीकियों १:३
- आपस में प्रेम उन्नति करता जाए : १ थिस्सलुनीकियों ३:१२
- अनेक पापों को ढ़ाँपने के लिये अधिक से अधिक प्रेम करो: १ पतरस ४:८

सहभागिता एवं मेल–मिलाप :

- एक दूसरे के साथ सहभागिता रखना – १ यूहन्ना १–७
- एक दूसरे को क्षमा करना – इफिसियों ३:१३, ४:३२, कुलुस्सियों ३:१३
- पवित्र चुम्बन से एक दूसरे को नमस्कार करो (कुछ संस्कृतियों में गले लगाना)– रोमियों १६:१६, १ कुरिन्थियों १६:२०, २ कुरिन्थियों १३:१२, १ पतरस ५:१४
- रोटी तोड़ते समय एक दूसरे के लिये ठहरना – १ कुरिन्थियों ११:३३
- एक दूसरे के दु:खों में सहभागी होना – १ कुरिन्थियों १२:२५–२६

सेवा :

- अपने वरदानों से एक दूसरे की सेवा करना – १ पतरस ४:१०
- प्रेम से एक दूसरे की सेवा करना – गलातियों ५:१३
- आपस में भलाई ही की चेष्टा करो – १ थिस्सलुनीकियों ५:१५
- एक दूसरे की बराबर चिन्ता करें – १ कुरिन्थियों १२:२५
- एक दूसरे का भार उठाएं – गलातियों ६:२
- एक दूसरे के पांव धोएं, दीनता का प्रतीक – यूहन्ना १३:१४
- एक दूसरे के साथ कार्य करना – १ कुरिन्थियों ३:९, २ कुरिन्थियों ६:१

सिखाना :

- सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ – कुलुस्सियों ३:१६
- हर दिन एक दूसरे को समझाते रहो – इब्रानियों ३:१३

प्रोत्साहित करना :

- एक दूसरे को प्रोत्साहित करो – कुलुस्सियों ३:१६, इब्रानियों १०:२५
- एक दूसरे को उत्साहित करो – इब्रानियों ३:१३

- एक दूसरे के साथ सत्य बोलो – इफिसियों ४:२५
- एक दूसरे के लिये प्राण दे दो – १ यूहन्ना ३:१६
- एक दूसरे को भले कामों व प्रेम के लिये उकसाएं – इब्रानियों १०:२४

प्रार्थना, अंगीकार तथा उन्नति :

- एक दूसरे के लिये प्रार्थना करना – याकूब ५:१६
- एक दूसरे के सामने पाप मान लेना – याकूब ५:१६
- एक दूसरे की उन्नति करो – १ थिस्सलुनीकियों ४:१८ तथा ५:१,११
- भजन,उपदेश,अन्य-भाषा, अन्य-भाषा का अर्थ आदि के द्वारा एक दूसरे की आत्मिक उन्नति करना – १ कुरिन्थियों १४:२६
- एक मन होकर परमेश्वर की बढ़ाई करना – रोमियों १५:६

नम्रता के साथ परस्पर एक ता रखना :

- एक दूसरे का आदर करो – रोमियों १२:१०
- एक मन रहो – २ कुरिन्थियों १३:११, रोमियों १२:१६, १५:५
- एक दूसरे पर दोष न लगाएं – रोमियों १४:१३
- एक दूसरे की बदनामी न करो – ४:११, ५:६
- एक दूसरे के आधीन रहो – इफिसियों ५:२१
- दीनता से एक दूसरे की सेवा के लिए कमर बांधे रहो – १ पतरस ५:५

एकता से रहो :

- एक दूसरे की सह लो – इफिसियों ४:२
- मेल-मिलाप से रहो – मरकुस ६:५०
- एक दूसरे की पहुनाई करो – १ पतरस ४:६, रोमियों १५:७

5. प्रभु भोज विधि इस प्रकार मनाएं कि पवित्रात्मा के प्रभाव से खीस्त की उपस्थिति अनुभव हो:

- पौलुस-तिमुथि पाठ्यक्रम में प्रभु-भोज विधि मनाने के संबंध में अनेकों प्रभावपूर्ण बाइबल अंश दिए हुए हैं। रोटी व दाखरस वितरित करने से पूर्व विश्वासियों को अवसर दीजिए कि वे प्रार्थना में पापों की क्षमा मांगें व गुप्त पापों का अंगीकार करें। यदि कोई जन कहे कि वह क्यों पापों का अंगीकार करे तो उसे १ कुरिन्थियों ११:२७-३१ तथा १ यूहन्ना १:७-१० दिखाएं। पापांगीकार के उदाहरण के रूप में दाऊद द्वारा किया गया पापों का अंगीकार भजनसंहिता ५१:१-१० पढ़कर सुना दीजिए।
- कुछ कलीसियाओं में एक ही प्याले का प्रयोग किया जाता है, और रोटी को दाखरस में भिगोकर दी जाती है। कुछ कलीसियाएं अलग अलग छोटे प्यालों में दाखरस देना पसन्द करती हैं। कुछ कलीसियाओं में अंगूरों का रस प्रयुक्त किया जाता है और कुछ में अन्य पेय-पदार्थ, सभी का प्रयोग मान्य है।
- प्रभुभोज विधि को एक और सामान्य शिक्षा का समय न बनने दीजिये, इसके गूढ़ भेदों को समझाते हुए इसकी गम्भीरता बनाए रखिए।

- कलीसिया को जल्दबाज़ी न करने दें, सबसे पहले पापों से पश्चात्ताप करने पर बल दें, तब इसमें सहभागी होने के लिये निमंत्रण दें।
- प्रभुभोज को सामान्य भोजन के हिस्से के रूप में प्रस्तुत न होने दें नहीं तो प्रभु की देह में सहभागी होने का इसका मूल अर्थ लुप्त हो जाएगा (१ कुरिन्थियों १०:१६)। संत पौलुस ने इस त्रुटि का सुधार किया था (१ कुरिन्थियों ११:२०-३४)।

6. विभिन्न प्रकार से स्तुति कीजिये

- यदि विरोधी सत्ता से बचाव की आवश्यकता हो, या विरोधियों का डर हो, तो विश्वासीगण हल्के स्वरों में स्तुति कर सकते हैं, ऐसा करते समय साक्षियां दी जा सकती हैं कि प्रभु ने हाल ही में, उनके जीवनों में क्या अद्भुद कार्य किए हैं, बाइबल-पठन हो सकता है, अगुवे के उपदेशों को दोहराया जा सकता है, नाटक व कविताएं प्रस्तुत की जा सकती हैं, पवित्र-दृष्य किया जा सकता है एवं शान्त होकर मनन-चिंतन किया जा सकता है।
- यह न समझें कि संगीत ही के द्वारा स्तुति अच्छी तरह हो सकती है। आराधना को मधुर संगीतों के प्रस्तुतिकरण से आरम्भ न कीजिये, इससे प्रत्येक व्यक्ति को स्तुति की गम्भीरता में नहीं लाया जा सकता है। ऐसी शैली में गीत गाईए जो प्रत्येक आयुवर्ग के लिये उपयुक्त हो तथा स्थानीय संस्कृति के अनुसार हो। विश्वासियों को उत्साहित कीजिये कि उनके द्वारा नये गीतों की रचना की जा सके। ऐसे गीतों का बहिष्कार कीजिये जो अन्य संस्कृति के गीतों से चुराए गये हों।

7. आराधना में स्तुति ऐसी कीजिए जिससे लोग गंभीर बनें व महाप्रतापी परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव करें।

सामुहिक आराधना में स्तुति-समय को आरम्भ व अन्त करने की निश्चित योजना बनाएं। नीचे एक सूची दी जा रही है जिसके द्वारा आराधना आरम्भ की जा सकती है।

- भजनसंहिता तथा अन्य आराधना संबंधी बाइबल अंशों का प्रयोग करके आराधना आरम्भकी जा सकती है। इस संबंध में कुछ बाइबल पद दिए जा रहे हैं:

भजन संहिता ८:१	भजन संहिता ८६:१	भजन संहिता १२३:१
भजन संहिता ९:१-२	भजन संहिता ९५:१-३	भजन संहिता १३६:१-४
भजन संहिता १८:१-२	भजन संहिता ९७:१,	भजन संहिता १४७:१
भजन संहिता २९:१-२	भजन संहिता ९८:१-२	भजन संहिता १४५:१-२
भजन संहिता ३४:१-३	भजन- १००	भजन संहिता १४८:१-२
भजन संहिता ४२:१	भजन संहिता १०४:१	भजन संहिता१४९:१-४
भजन संहिता ४७:१-२	भजन संहिता १०५:१-३	भजन-१५०
भजन संहिता ६६:१-४	भजन संहिता ११३:१-६	हबक्कूक २:२०
भजन संहिता ६७:१-३	भजन संहिता १०३:१	प्रकाशितवाक्य ७:९-१२
भजन संहिता ८१:१	भजन संहिता १११:१-३	प्रकाशितवाक्य २:७
भजन संहिता ८४:१-२	भजन-११७	प्रकाशितवाक्य २२:६-७

- पवित्रात्मा से प्रार्थना करें कि वह आपके मन आराधना हेतु तैयार करे व ख्रीस्त की उपस्थिति दे।

- आराधना ऐसी हो कि लोगों को आभास होवे कि उन्होंने वास्तव में आराधना की है।
- ऐसा वातावरण न होने दीजिये कि लोग महापवित्र परमेश्वर की उपस्थिति से वंचित रह जाएं।

  अर्थपूर्ण आराधना के संचालन से संबंधित और भी बातें दी जा रही हैं।
- अपने क्षेत्र की अन्य कलीसियाओं के लिए प्रार्थना कीजिए, हालांकि वे पारंपरिक हैं व भिन्न प्रकार से आराधना करती हैं।
- ऐसे लोगों को स्नेहपूर्वक सुधारिए जिन्होंने क्रोध में आकर दूसरी कलीसियाओं को छोड़ दिया हो और सदैव आपसे उनकी आलोचना करते हों।
- आलोचनात्मक आत्मा में होकर दूसरे पादरी व कलीसियाओं के विषय में न बोलें जो भिन्न प्रकार से कार्य करते हैं।
- विश्वासियों को रोकें कि वे अन्य कलीसियाओं के कार्यो के विषय में आलोचनात्मक दृष्टिकोण न अपनाएं।

8. विश्वासियों को अवसर दें कि वे परमेश्वर को भेंट चढ़ाएं :

- विश्वासियों को बताएं कि उनके दान परमेश्वर के राज्य की उन्नति में तथा लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति में उपयोग किया जाता है। छोटे समूहों में कुछ विश्वासी लोग गुप्तदान देना उत्तम समझते हैं।
- अगुवों को भिक्षा समान दान एकत्रित करने से रोकिए जो बहुधा यह कहते हुए दान एकत्रित करते हैं कि उनका दान भले कार्यो में लगाया जाता है, इससे वे लोग लज्जा का अनुभव करते हैं जिनके पास देने के लिये पैसा नहीं होता है।
- अगुवों को भौतिक पदार्थ खरीदने एवं अपनी सहायता आप ही करने से रोकें। अन्य विश्वासियों की भी आवश्यकताएं होती हैं जो प्रभु पूरा करता है।
- आय-व्यय का लेखा-जोखा सही रखिए और कलीसिया द्वारा नियुक्त खजान्ची को इसका उत्तरदायित्व सौंप दीजिए।

9. ऐसी प्रचार सभाएं आयोजित कीजिए जिनका मुख्य उद्देश्य जीवन परिवर्तन एवं आत्मिक उन्नति हो :

- जब प्रार्थना व योजनाएं बनाने का समय हो तो विश्वासियों का ध्यान-केन्द्र लोगों की आत्मिक उन्नति पर होना चाहिये। इसके लिये नई गतिविधियां सम्मिलित कीजिये। उदाहरणार्थ- नये विश्वासियों को लाना, बपतिस्मा देना, कलीसिया में नये नियम पर आधारित कार्यक्रम आरम्भ करना, नई कलीसियाएं व प्रार्थना समूहों का गठन करना, नये अगुवों को प्रशिक्षित करना, विश्वासियों व मित्रों को आशीषित करने के लिये मिलने जाना, दुखी व पीड़ित लोगों की सेवा के लिये दल बनाना आदि।
- नकारात्मक बातों जैसे बीमारी, सैद्धान्तिक मतभेद, समाज में पाप-समस्या इत्यादि पर बातचीत करने में अधिकांश समय नष्ट न कीजिए। सदैव कुछ समय सकारात्मक बातों में लगाएं जिससे मसीह की देह उन्नति करे।